VOL- XI ISSUE- X OCTOBER 2024 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 8.02 ISSN 2349-638x

लोकतंत्र का उत्सव

प्रो.डॉ.विभा प्रवीण देशपांडे
कला व विज्ञान महाविद्यालय कुऱ्हा

अपने 75 वर्षो के सफर मे भारत का लोकतंत्र कितना सफल रहा,यह देखने के लिये इन वर्षो का इतिहास,देश की उपलब्धिया,देश का विकास,सामाजिक-आर्थिक दशा,लोगो की खुशहाली आदि पर गौर करने की जरुरत है। पिछले 75 सालो मे देश ने काफी विकास किया है। देशवासियो का जीवन-स्तर पहले से बेहतर हुआ है। कृषी,ओद्योगिक विकास,शिक्षा,चिकित्सा,अंतरिक्ष विज्ञान जेसे कई क्षेत्रो में भारत नेकामयाबी हासिल की है। लेकिनलोकतंत्र को आकंने के लिये ये पर्याप्त नही है।

वर्तमान मे लोकतंत्र की स्थिती पर प्रकाश डालने के पूर्व निम्न बिंदुओ पर यहा प्रकाश डालना आवश्यक है।

अब्राहम लिंकन की परिभाषा जो उन्होंने लोकतंत्र के लिए दी थी, वह सबसे सरल और इस प्रकार है: "Government of the people, by the people, for the people."

इसका अर्थ है:-"जनता की सरकार, जनता द्वारा सरकार, जनता के लिए सरकार"

यह परिभाषा लोकतंत्र के आदर्श को पकड़ती है और यह सुनिश्चित करने के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में कार्य करती है कि सरकार लोगों की सेवा करे और उनके लिए काम करे।

वर्तमान में लोकशाही व उसकी उपलब्धिया -:

वर्तमान लोकशाही व उसकी उपलब्धियाँ के बारे में जानने से पहले, हमें यह समझना होगा कि लोकशाही क्या है। लोकशाही एक ऐसी प्रणाली है जहाँ जनता अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करती है जो सरकार में उनका प्रतिनिधित्व करते हैं। यह प्रणाली सुनिश्चित करती है कि सरकार जनता के हित में काम करे और उनके अधिकारों की रक्षा करे [1]।अब, वर्तमान लोकशाही की उपलब्धियों की बात करते हैं:

- **सामाजिक न्याय**: लोकशाही ने सामाजिक न्याय को बढ़ावा दिया है, जिससे सभी नागरिकों को समान अधिकार और अवसर मिलते हैं।
- **आर्थिक विकास** : लोकशाही ने आर्थिक विकास को बढ़ावा दिया है, जिससे देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होती है।
- **शिक्षा और स्वास्थ्य** : लोकशाही ने शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति की है, जिससे नागरिकों का जीवन स्तर सुधरता है।
- **महिला सशक्तिकरण** : लोकशाही ने महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया है, ...

लोकशाही की आवश्यकता व महत्त्व-

आवश्यकता:

1. **जनता की भागीदारी**: लोकशाही में जनता की भागीदारी आवश्यक है, जिससे सरकार जनता के हित में काम करे।
2. **जवाबदेही**: लोकशाही में सरकार जनता के प्रति जवाबदेह होती है, जिससे सरकार को अपने कार्यों के लिए उत्तरदायी होना पड़ता है।
3. **स्वतंत्रता**: लोकशाही में जनता को विचार, अभिव्यक्ति, और धर्म की स्वतंत्रता मिलती है।
4. **न्याय**: लोकशाही में न्यायपालिका स्वतंत्र होती है, जिससे न्याय की गारंटी मिलती है।
5. **आर्थिक विकास**: लोकशाही में आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है, जिससे देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होती है।

महत्त्व:-

1. **सामाजिक न्याय**: लोकशाही सामाजिक न्याय को बढ़ावा देती है, जिससे सभी नागरिकों को समान अधिकार और अवसर मिलते हैं।

2. **राजनीतिक स्थिरता**: लोकशाही राजनीतिक स्थिरता को बढ़ावा देती है, जिससे देश में शांति और सुरक्षा बनी रहती है।

वर्तमान राजनीती व लोकशाही का गिरता स्तर-: वर्तमान राजनीति और लोकशाही का गिरता स्तर एक जटिल और विवादास्पद विषय है। कई कारकों को इसके लिए जिम्मेदार माना जा सकता है, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

राजनीतिक दलों की कमजोरी: राजनीतिक दलों की कमजोरी और उनके बीच की लड़ाई लोकशाही को कमजोर कर रही है [1].

नेताओं की गलती: नेताओं की गलती और उनके द्वारा किए गए भ्रष्टाचार के कारण लोकशाही का स्तर गिर रहा है.

जनता की जागरूकता की कमी: जनता की जागरूकता की कमी और उनके द्वारा राजनीतिक मुद्दों पर ध्यान न देने के कारण लोकशाही का स्तर गिर रहा है.

मीडिया की भूमिका: मीडिया की भूमिका भी लोकशाही के स्तर को प्रभावित कर रही है, क्योंकि अक्सर मीडिया सच्ची खबरें नहीं देता है.

इन कारकों को बदलने के लिए हमें एक साथ मिलकर काम करना होगा, ताकि लोकशाही का स्तर सुधर सके और हमारा देश विकास कर सके.

लोकशाही विकसीत करने के उपाय

लोकशाही विकसित करने के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाए जा सकते हैं:

1. **जनता की जागरूकता बढ़ाना**: जनता को राजनीतिक मुद्दों और उनके अधिकारों के बारे में जागरूक करना।
2. **शिक्षा का प्रसार**: शिक्षा को बढ़ावा देने से लोगों में जागरूकता और समझ बढ़ेगी।
3. **राजनीतिक दलों की सुधार**: राजनीतिक दलों को अधिक पारदर्शी और जवाबदेह बनाना।
4. **नेताओं की जवाबदेही**: नेताओं को उनके कार्यों के लिए जवाबदेह बनाना।
5. **मीडिया की स्वतंत्रता**: मीडिया को स्वतंत्र और निष्पक्ष बनाना।
6. **न्यायपालिका की स्वतंत्रता**: न्यायपालिका को स्वतंत्र और निष्पक्ष बनाना।
7. **सामाजिक न्याय**: सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने से समाज में समानता और न्याय होगा।
8. **आर्थिक विकास**: आर्थिक विकास से लोगों का जीवन स्तर सुधरेगा।
9. **महिला सशक्तिकरण**: महिलाओं को समान अधिकार और अवसर देने से समाज में समानता बढ़ेगी।
10. **युवा भागीदारी**: युवाओं को राजनीति ...

हम लोकतंत्र को एक जीवनप्रणाली कहते है-

"लोकशाही एक जीवनप्रणाली है, जिसमें जनता की भागीदारी, समानता, न्याय, और स्वतंत्रता के मूल्यों को महत्व दिया जाता है। यह एक ऐसी प्रणाली है जिसमें जनता के हित में निर्णय लिए जाते हैं और सरकार जनता के प्रति जवाबदेह होती है।"

लोकशाही को जीवनप्रणाली के रूप में देखने के लिए, हमें इसके **मूल्यों और सिद्धांतों को** समझना होगा:

1. **समानता**: लोकशाही में सभी नागरिकों को समान अधिकार और अवसर मिलते हैं।
2. **न्याय**: लोकशाही में न्यायपालिका स्वतंत्र और निष्पक्ष होती है, जो न्याय की गारंटी देती है।
3. **स्वतंत्रता**: लोकशाही में जनता को विचार, अभिव्यक्ति, और धर्म की स्वतंत्रता मिलती है।
4. **जनता की भागीदारी**: लोकशाही में जनता को सरकार में भाग लेने का अधिकार होता है।
5. **जवाबदेही**: लोकशाही में सरकार जनता के प्रति जवाबदेह होती है।

लोकशाही को जीवनप्रणाली के रूप में अपनाने से हमें:

1. सामाजिक न्याय की प्राप्ती होती है।
2. आर्थिक विकास होता है।
3. शिक्षा और स्वास्थ्य में सुधार होता है।
4. महिला सशक्तीकरण होता है।
5. युवा भागीदारी बढ़ती है।

इस प्रकार, लोकशाही एक जीवनप्रणाली है जो हमें समानता, न्याय, स्वतंत्रता, और जवाबदेही के मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित करती है।

देश मे चुनावो का दोर चल रहा है,हमारे देश मे चुनाव एक उत्सव की भाति लिया जाता है। महाराष्ट्र में दिनांक 20 नवंबर 2024 विधानसभा चुनाव के लिए मतदान हुआ है (288 विधानसभा सीट के लिए) इस चुनाव में 263 महिला उम्मीदवार, 4135 उम्मीदवार अपने नसीब आजमाने के लिए खड़े हुए हैं। 9 करोड़ 70 लाख 25 हजार119 मतदाता है इसमें 5 करोड़ 22 हजार 739 पुरुष तो 4 करोड़ 69 लाख 96 हजार 279 महिला मतदाता है। 6,101 तृतीयपंथीय मतदार है। ये तो एक राज्य का उदाहरण है। इस तरह भारत के विविध हिस्से मे चुनाव चलते रहते है। इस तरह भारत ये विश्व का सबसे बडा लोकतंत्र प्रधान देश है।परंतु वर्तमान स्थिती पर नजर डाले तो-

---

वर्तमान स्थिती –

1) संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) की रिपोर्ट की हालिया रिपोर्ट के मुताबिक भारत की करीब ३६ करोड आबादी अभी भी स्वास्थ्य,पोषण,शिक्षा ओर स्वच्छता से वंचित है। दूसरी तरफ,देश का एक तबका एसा है जिसे किसी चीज की कोई कमी नही।
2) विश्व असमानता रिपोर्ट के अनुसार भारत की राष्ट्रीय आय का 22 फिसदी हिस्से पर सिर्फ 1 फिसदी लोगो का कब्जा है।
3) भारत मे लैन्गिक भेदभाव भी एक समस्या है UNDP ने 2017 मे भारत लैन्गिकअसमानता सूचकांक मे 127 वें स्थानपर है।
4) लोकतंत्र का चोथा खंभा माने जानेवाले मीडिया की आजादी छोटी- छोटी बातो को महत्व देना इत्यादि कारणो से मीडिया भी सवालो के घेरे मे है।
5) सांप्रदायिकता,क्षेत्रवाद,कट्टरता,दंगल.हल्ला,जातिवाद इन सब बातो को प्रश्रय दिया जाता है ,जिसके कारण असहिष्णुता ,दहशतवादी वातावरण तेयार हो रहा है।

लोकतंत्र को विकसित ,कामयाब करने हेतू उपाय-

1- जनता की आशा-आकांक्षाओ को पुरा करने का प्रयत्न सरकार ने करना चाहिये। गरीबी,भूखमरी,बेरोजगारी
2- कार्यपालिका,व्यवस्थापिका,न्यायपालिका शासन पद्धती के इन तीनो अंगो मे अव्यवस्था है।
3- जनता के सहभाग बिना लोकतंत्र का सफल होना संभव नही। प्रत्येक नागरिक का ये कर्तव्य है की वे मतदान के अधिकार का उपयोग करे। चुनाव जितने के लिये भ्रष्ट्राचार, प्रलोभन का पयोग ना करे।

संदर्भ ग्रंथ –

1.वर्तमानपत्र तरुण भारत दि.19/11/2024
2.लोकशाही ओर लोकतंत्र –डॉ.रामप्रकाश त्रिपाठी,प्रकाशक- कार्यान्वय निदेशालय,भोपाल मध्यप्रदेश – वर्ष 2019.
3. लोकशाही की चुनोतीया-प्रो.बी.के.प्रसाद, प्रकाशक – अवध पब्लिशर्स एड डीस्ट्रीब्यूटर्स.लखनऊ वर्ष 2020.